!! ओ३म् !!

INCLUSIVE AND QUALITY EDUCATION : CHALLENGES AND ISSUES

समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे

मुख्य सम्पादक :

डॉ. राजेन्द्र कुमार गोदारा

सम्पादिका :

डॉ. रेखा सोनी

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-936150-4-1

समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे
Inclusive and Quality Education : Challenges and Issues

शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्ध एवं की NAAC की भूमिका

सारांश – समस्त समाज, देश व विश्व के व्यक्तियों के जीवन में उत्तरोत्तर गुणात्मकता का विकास होना एक सामान्य प्रक्रिया है। यह गुणात्मकता किस स्तर पर कैसी हो, इस परिप्रेक्ष्य में प्रबन्धकों व शिक्षाविदों ने विशेष ध्यान आकर्षित किया है। इसके अन्तर्गत गुणात्मक प्रतिबद्धता, गुणात्मक नियंत्रण, गुणात्मक वर्ग, गुणात्मक प्रबन्धन तथा सम्पूर्णता के सन्दर्भ में गुणात्मक प्रबन्धन के कारकों पर गहन चिन्तन व विचार–विमर्श किया गया तथा सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन ज्फड की विचारधारा को मान्यता मिली। शिक्षा में भी इस विचारधारा को लाने का उद्देश्य शिक्षा में उत्कृष्टता लाने व उससे लाभान्वित एवं सन्तुष्ट होने वाले श्रेष्ठ एवं योग्य विद्यार्थियों को तैयार करना स्वीकार किया गया। शिक्षा में गुणात्मकता के संदर्भ में विद्यार्थी, अभिभावक प्रशासक, नियोक्ता, अध्यापक अथवा सम्भवतः सभी की संतुष्टि जुड़ी हुई है। समाज ही शिक्षा को उपलब्ध कराने वाल' अभिकरण होता है तथा शिक्षा की गुणात्मकता का मूल्यांकन भी विद्यार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही नहीं होता अपितु अभिभावक समाज प्रशासक तथा अन्य अभिकरणों से भी सम्बद्ध रहता है। NAAC किसी भी उच्च शैक्षिक संस्था का इन्हीं आयामों को ध्यान में रखकर गुणवत्ता का मूल्यांकन करती है तथा शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता का मूल्यांकन एवं प्रत्यायन करती है।

सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन का सर्वोत्तम उदाहरण हमारी गुरुकुल प्रणाली है। गुरुकुल यानि गुरु का परिवार। प्राचीनकाल में शिक्षा हेतु गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी जहां बालक गुरु के सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करता था। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूर्ण होने तक पूरे समय गुरु एवं उसके परिवार के साथ रहता था। वह एक प्रकार का स्थानबद्ध प्रशिक्षण काल होता था। जहां पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धन के संदर्भ में संस्था की प्रतिष्ठा के साथ व्यक्तित्व उन्नयन की क्षमता को ध्यान में रखकर ही छात्र चयन की प्रक्रिया की जाती थी तथा शिक्षा व्यवस्था निम्नानुसार थी–

1. छात्र का चयन उसकी अधिगम क्षमता के आधार पर किया जाता था, न की गौत्र के आधार पर।
2. छात्र की व्यक्तिगत प्रतिभा , रूचि तथा योग्यता के आधार पर गुरु द्वारा उसके लिए पाठ्यक्रम एवं विषयों का निर्धारण किया जाता था।
3. मूल्यों की शिक्षा के लिए गुरु का जीवन एक खुली किताब के समान होता था।
4. गुरु के परिवार के साथ रहते हुए विद्यार्थी गृहकार्य तथा जीवन कौशल को समग्रता के साथ सीख लेता था। वहां शिक्षा, जीवन की तैयारी के लिए नहीं वरन् वह जीवन का स्वतः एक हिस्सा होती थी।
5. गुरु द्वारा शिष्यों में भेदभाव नहीं किया जाता था। 'कच' को दानव गुरु शुक्राचार्य द्वारा संजीवन विद्या प्रदान की गई थी।
6. छान्दोग्योपनिषद के अनुसार शिक्षा की गुणात्मकता के उच्चत्तम स्वरूप को जानने हेतु 'परा विद्या' की अनुशंसा की जाती थी।
7. गुरु द्वारा छात्र के पूर्ण शिक्षित होने पर ही जाने की अनुमति दी जाती थी।

उक्त आधार हम कह सकते हैं कि प्राचीन गुरुकुल का आधार सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन (TQM) ही था। गुणात्मक शैक्षिक प्रबन्धन में 'सर्वोत्कृष्टता की कोई परिधि नहीं होती। इसकी सम्भावनाएं उत्तरोत्तर बनी रहती है। वर्तमान में सम्पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धन की अवधारणा को आरम्भ एवं विकसित करने का श्रेय अमेरिका के डब्ल्यू एडवर्डस डेमिंग को दिया जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् कम्पनियों व कारखानों की उत्पादन और कार्यप्रणाली के गुणात्मक सुधार हेतु यह सम्प्रत्यय प्रयुक्त किया जाने लगा। फैक्ट्री से उत्पादित मॉडल उस समय वैश्विक बाजार में पुराने व अनुपयोगी साबित होने से उत्पादन और प्रणाली में सुधार व परिवर्तन की दिशा में गुणात्मक प्रबन्धन पर ध्यान दिया जाने लगा। परिणामस्वरूप फैक्ट्रियों पर यह सिद्धान्त प्रभावी रहा, जिसने पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित किया जिससे प्रत्येक संगठन को सम्पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धन (TQM) की आवश्यकता प्रतीत होने लगी।

कुछ शिक्षाविद व शैक्षिक प्रबन्धक यह मानते है कि डेमिंग का यह सिद्धान्त शिक्षा में अत्यन्त आवश्यक है।

Scanned by CamScanner